सुत्त-सार

(संयुत्तनिकाय)

द्वितीय भाग

सत्येंद्र नाथ टंडन

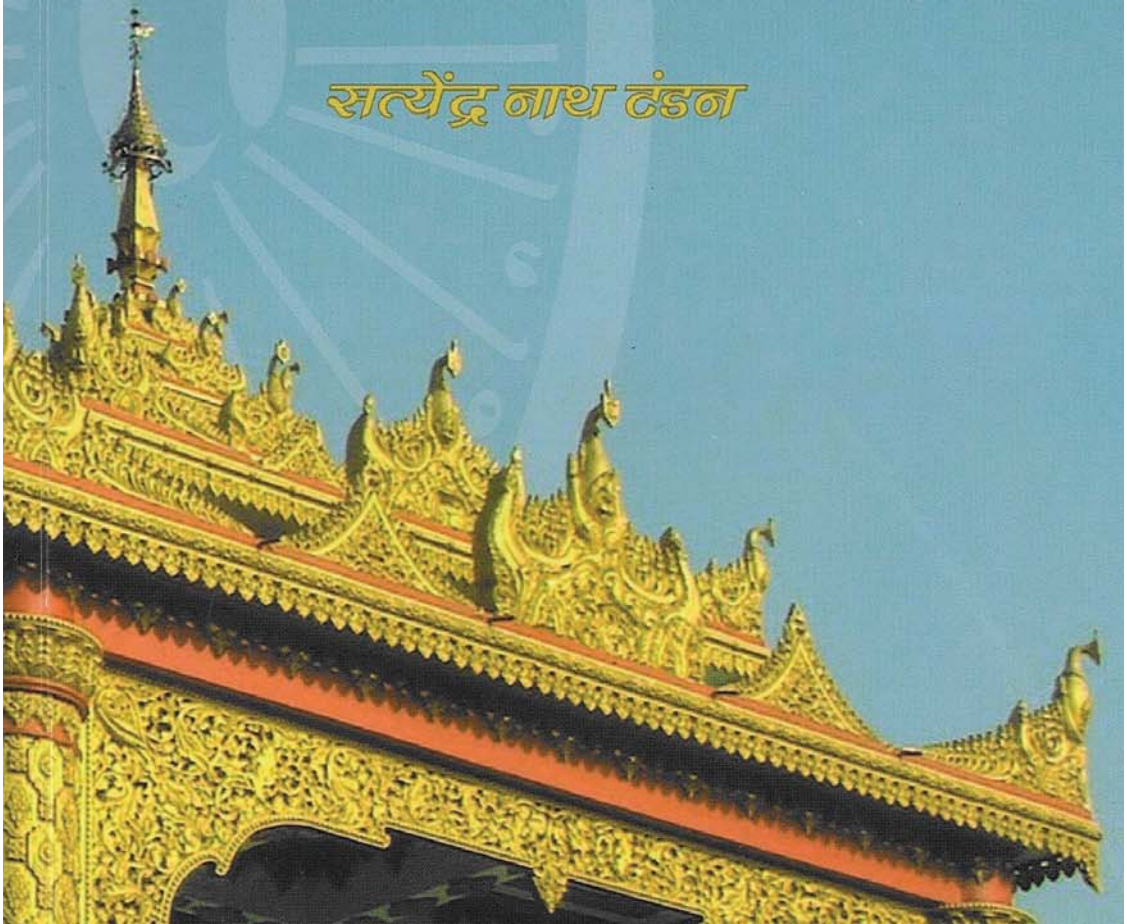

सुत्त-सार

(संयुत्तनिकाय)

(द्वितीय भाग)

सत्येंद्र नाथ टंडन

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

सुत्तसार

(द्वितीय भाग)

विषयानुक्रमणिका

भूमिका xiii

संयुत्तनिकाय-१ १

सगाथावग्ग १

१. देवतासंयुत्त १

१. नळ-वग्ग १

२. नन्दन-वग्ग १

३. सत्ति-वग्ग २

४. सतुल्लपकायिक-वग्ग ३

५. आदित्त-वग्ग ४

६. जरा-वग्ग ५

७. अद्ध-वग्ग ५

८. छेत्वा-वग्ग ६

२. देवपुत्तसंयुत्त ७

१. पठम-वग्ग ७

२. अनाथपिण्डिक-वग्ग ८

३. नानातित्थिय-वग्ग ८

३. कोसलसंयुत्त १०

१. पठम-वग्ग १०

२. दुतिय-वग्ग ११

३. ततिय-वग्ग १२

४. मारसंयुत्त १४
१. पठम-वग्ग १४
२. दुतिय-वग्ग.....१५
३. ततिय-वग्ग १५
५. भिक्खुनीसंयुत्त १७
६. ब्रह्मसंयुत्त १९
१. पठम-वग्ग १९
२. दुतिय-वग्ग.....२१
७. ब्राह्मणसंयुत्त २२
१. अरहन्त-वग्ग २२
२. उपासक-वग्ग.....२३
८. वङ्गीससंयुत्त.....२६
९. वनसंयुत्त २७
१०. यक्खसंयुत्त २९
११. सक्कसंयुत्त ३१
१. पठम-वग्ग ३१
२. दुतिय-वग्ग.....३२
३. ततिय-वग्ग ३३
निदानवग्ग ३५
१. निदानसंयुत्त ३५
१. बुद्ध-वग्गो ३५
२. आहार-वग्गो ३६
३. दसबल-वग्गो ३७
४. कळारखत्तिय-वग्गो ३९
५. गहपति-वग्गो.....४०
६. दुक्ख-वग्गो ४१
७. महावग्गो ४२

८. समणब्राह्मण-वग्गो.....४४
९. अन्तरपेय्याल.....४५
२. अभिसमयसंयुत्त.....४६
३. धातुसंयुत्त.....४७
१. नानत्त-वग्गो.....४७
२. दुतिय-वग्गो.....४७
३. कम्मपथ-वग्गो.....४८
४. चतुत्थ-वग्गो.....४९
४. अनमतग्गसंयुत्त.....५१
१. पठम-वग्गो.....५१
२. दुतिय-वग्गो.....५२
५. कस्सपसंयुत्त.....५३
६. लाभसक्कारसंयुत्त.....५६
१. पठम-वग्गो.....५६
२. दुतिय-वग्गो.....५६
३. ततिय-वग्गो.....५७
४. चतुत्थ-वग्गो.....५७
७. राहुलसंयुत्त.....५९
१. पठम-वग्गो.....५९
२. दुतिय-वग्गो.....६०
८. लक्खणसंयुत्त.....६१
१. पठम-वग्गो.....६१
२. दुतिय-वग्गो.....६१
९. ओपम्मसंयुत्त.....६२
१०. भिक्खुसंयुत्त.....६३

संयुत्तनिकाय-२ ६५

खन्धवग्ग ६५

१. खन्धसंयुत्त.....६५

१. नकुलपितु-वग्ग ६५

२. अनिच्च-वग्ग ६६

३. भार-वग्ग ६७

४. नतुम्हाकं-वग्ग ६८

५. अत्तदीप-वग्ग.....६९

६. उपय-वग्ग ७०

७. अरहन्त-वग्ग ७२

८. खज्जनीय-वग्ग ७२

९. थेर-वग्ग.....७४

१०. पुप्फ-वग्ग ७७

११. अन्त-वग्ग.....७८

१२. धम्मकथिक-वग्ग ७९

१३. अविज्जा-वग्ग ८०

१४. कुक्कुळ-वग्ग ८१

१५. दिट्ठि-वग्ग ८१

२. राधसंयुत्त.....८३

१. पठम-वग्ग ८३

२. दुतिय-वग्ग.....८३

३. आयाचन-वग्ग.....८४

४. उपनिसिन्न-वग्ग ८४

३. दिट्ठिसंयुत्त ८५

१. सोतापत्ति-वग्ग.....८५

२. दुतियगमन-वग्ग ८५

३. ततियगमन-वग्ग ८६

४. चतुत्थगमन-वग्ग ८६
४. ओक्कन्तसंयुत्त ८७
५. उप्पादसंयुत्त ८८
६. किलेससंयुत्त ८९
७. सारिपुत्तसंयुत्त.....९०
८. नागसंयुत्त ९१
९. सुपण्णसंयुत्त.....९२
१०. गन्धब्बकायसंयुत्त.....९३
११. वलाहकसंयुत्त ९४
१२. वच्छगोत्तसंयुत्त ९५
१३. झानसंयुत्त ९६
सळायतनवग्ग ९८
१. सळायतनसंयुत्त ९८
१. अनिच्च-वग्ग ९८
२. यमक-वग्ग.....९९
३. सब्ब-वग्ग.....९९
४. जातिधम्म-वग्ग.....१००
५. सब्बअनिच्च-वग्ग.....१००
६. अविज्जा-वग्ग १०१
७. मिगजाल-वग्ग.....१०१
८. गिलान-वग्ग १०२
९. छन्न-वग्ग.....१०३
१. सळ-वग्ग.....१०५
११. योगक्खेमि-वग्ग.....१०६
१२. लोककामगुण-वग्ग.....१०७
१३. गहपति-वग्ग १०९
१४. देवदह-वग्ग ११०

१५. नवपुराण-वग्ग १११
१६. नन्दिक्खय-वग्ग १११
१७. सट्ठि-पेय्याल ११२
१८. समुद्द-वग्ग ११३
१९. आसीविस-वग्ग ११४
२. वेदनासंयुत्त ११७
१. सगाथा-वग्ग ११७
२. रहोगत-वग्ग ११८
३. अट्ठसतपरियाय-वग्ग ११९
३. मातुगामसंयुत्त १२१
१. पठमपेय्याल-वग्ग १२१
२. दुतियपेय्याल-वग्ग १२१
३. बल-वग्ग १२१
४. जम्बुखादकसंयुत्त १२३
५. सामण्डकसंयुत्त १२४
६. मोग्गल्लानसंयुत्त १२५
७. चित्तसंयुत्त १२७
८. गामणिसंयुत्त १२९
९. असङ्खतसंयुत्त १३२
(१) पठम-वग्ग १३२
(२) दुतिय-वग्ग १३२
१०. अब्याकतसंयुत्त १३३
संयुत्तनिकाय-३ १३४
महावग्ग १३४
१. मग्गसंयुत्त १३४
(१) अविज्जा-वग्ग १३४
(२) विहार-वग्ग १३५

(३) मिच्छत्त-वग्ग १३५
(४) पटिपत्ति-वग्ग १३६
(५) अप्पमाद-वग्ग १३८
(६) बलकरणीय-वग्ग १३९
(७) एसना-वग्ग १४०
(८) ओघ-वग्ग १४०
२. बोज्झङ्गसंयुत्त १४१
(१) पब्बत-वग्ग १४१
(२) गिलान-वग्ग १४२
(३) उदायि-वग्ग १४३
(४) नीवरण-वग्ग १४४
(५) चक्कवत्ति-वग्ग १४४
(६) साकच्छ-वग्ग १४५
(७) आनापान-वग्ग १४६
(८) निरोध-वग्ग १४६
(९) गङ्गापेय्याल-वग्ग १४६
३. सतिपट्ठानसंयुत्त १४८
(१) अम्बपालि-वग्ग १४८
(२) नालन्द-वग्ग १४९
(३) सीलट्ठिति-वग्ग १५१
(४) अननुस्सुत-वग्ग १५१
(५) अमत-वग्ग १५२
४. इंद्रियसंयुत्त १५४
(१) सुद्धिक-वग्ग १५४
(२) मुदुतर-वग्ग १५४
(३) छळिंद्रिय-वग्ग १५५
(४) सुखिंद्रिय-वग्ग १५६

(५) जरा-वग्ग १५७
(६) सूकरखत-वग्ग १५८
(७) बोधिपक्खिय-वग्ग १५९
(८/१-१७) गङ्गापेय्यालादि-वग्ग १५९
५. सम्मप्पधानसंयुत्त १६०
(१) गङ्गापेय्याल-वग्ग.....१६०
(२/१-५) अप्पमादादि-वग्ग १६०
६. बलसंयुत्त १६१
(१) गङ्गापेय्याल-वग्ग.....१६१
(२-१) अप्पमादादि-वग्ग.....१६१
७. इद्धिपादसंयुत्त १६२
(१) चापाल-वग्ग १६२
(२) पासादकम्पन-वग्ग १६३
(३) अयोगुळ वग्ग १६४
(४/१-८) गङ्गापेय्यालादि-वग्ग.....१६५
८. अनुरुद्धसंयुत्त १६६
(१) रहोगत-वग्ग १६६
(२) दुतिय-वग्ग १६६
९. ञानसंयुत्त १६८
(१) गङ्गापेय्याल-वग्ग.....१६८
(२/१-५) अप्पमादादि-वग्ग १६८
१०. आनापानसंयुत्त.....१६९
(१) एकधम्म-वग्ग.....१६९
(२) दुतिय-वग्ग १७०
११. सोतापत्तिसंयुत्त.....१७२
(१) वेळुद्वार-वग्ग.....१७२
(२) राजकाराम-वग्ग १७४

(३) सरणानि-वग्ग १७४
(४) पुञ्ञाभिसन्द-वग्ग १७६
(५) सगाथकपुञ्ञाभिसन्द-वग्ग १७६
(६) सप्पञ्ञ-वग्ग १७७
(७) महापञ्ञ-वग्ग १७८
१२. सच्चसंयुत्त १७९
(१) समाधि-वग्ग १७९
(२) धम्मचक्कप्पवत्तन-वग्ग १८०
(३) कोटिगाम-वग्ग १८१
(४) सीसपावन-वग्ग १८२
(५) पपात-वग्ग १८३
(६) अभिसमय-वग्ग १८४
(७) पठमआमकधञ्ञपेय्याल-वग्ग १८४
(८) दुतियआमकधञ्ञपेय्याल-वग्ग १८५
(९) ततियआमकधञ्ञपेय्याल-वग्ग १८५
(१०) चतुत्थआमकधञ्ञपेय्याल-वग्ग १८५
(११) पञ्चगतिपेय्याल-वग्ग १८६

भूमिका

'सुत्तसार' में 'सुत्त पिटक' के सुत्तों का सार है।

भगवान बुद्ध की वाणी तीन पिटकों में सुरक्षित है – विनय पिटक, सुत्त पिटक तथा अभिधम्म पिटक। 'विनय पिटक' में अधिकतर भिक्षुओं-भिक्षुणिओं के लिए विनय का विधान है, 'सुत्त पिटक' में सामान्य साधकों के लिए दिये गये उपदेशों का संग्रह है और 'अभिधम्म पिटक' में विपश्यना साधना में खूब पके हुए साधकों के लिए गूढ़ धर्मोपदेश हैं।

बुद्ध-वाणी में 'सुत्त पिटक' का विशेष महत्त्व है क्योंकि सबसे अधिक सामग्री इसी पिटक में है और हर किसी के लिए उपयोगी भी। विपश्यना साधना सिखाते समय विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्काजी भी इसी पिटक के उद्धरण दे-देकर धर्म समझाते हैं। अभिधम्म पिटक समझने के लिए भी सुत्त पिटक को जानने की जरूरत होती है जैसे छत पर जाने के लिए सीढ़ी की।

सम्यक संबुद्ध की वाणी का एक-एक शब्द सारगर्भित होता है। उसमें से सार निकालना अपने आपको धोखा देना है। अतः किसी भी पाठक के मन में यह भाव कदापि नहीं जागना चाहिए कि सार की बातें छांट-छांट कर यहां प्रस्तुत कर दी गयी हैं और बाकी सब कुछ निःसार है।

यह 'सुत्तसार' सुत्तों का सार इस मायने में है कि सुत्त पिटक में जो कुछ वर्णित है उसका यह स्थूल रूप में अविकल (बिना अपनी ओर से कुछ जोड़े-तोड़े) प्रस्तुतीकरण है। इस सार की तुलना उस बयार से की जा सकती है जो रंग-बिरंगे, सुगंधित पुष्पों के बीच में से लांघ कर मात्र उनकी सुगंध अपने साथ हर ले जाती है। यह 'सुत्तसार' भी भगवान के चित्र-विचित्र, निर्वाण की गंध से सुवासित उपदेशों का एक हल्का-सा **परिचयमात्र** है।

वस्तुतः यह ग्रंथ कोई नयी कृति नहीं है। विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा मूल रूप में प्रकाशित 'सुत्त पिटक' के हर ग्रंथ के साथ उसमें सम्मिलित सुत्तों का सार उनमें दिया गया है। आचार्य श्री सत्यनाराणजी गोयन्का के आदेशानुसार

यह सार इसलिए तैयार किया गया था कि साधक पहले इन्हें पढ़ कर फिर सुत्तों को पढ़ें, तो इससे सुत्त और अधिक अच्छी तरह समझ में आने लगेंगे।

अब आचार्यश्री सत्यनारायणजी गोयन्का ने यह उचित समझा है कि यदि ये सभी सुत्तसार स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिये जायँ तो एक अतिरिक्त लाभ यह होगा कि साधकगण जनभाषा के माध्यम से बुद्ध-वाणी को टुकड़ों-टुकड़ों में ही नहीं, बल्कि समग्र रूप से भी सुगमतापूर्वक समझने लगेंगे। आचार्यश्री के इसी चिंतन के फलस्वरूप यह कृति प्रस्तुत की जा रही है।

वर्तमान ग्रंथत्रय केवल सुत्तपिटक के सुत्तों का सार हैं जो कि पाठकों की सुविधा के लिए तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। इसके पहले भाग में दीघ एवं मज्झिम निकायों का, दूसरे में संयुत्त निकाय का और तीसरे में अंगुत्तर एवं खुद्दक निकायों का समावेश है।

जब सुत्तसार तैयार किये जा रहे थे, तब विपश्यना विशोधन विन्यास के उद्भट विद्वान डॉ. अंगराज चौधरी ने इनका निरूपण कर इनमें समुचित सुधार किये थे। इसके लिए मैं उनका अत्यंत आभारी हूं।

हमें विश्वास है कि इस कृति से विपश्यी साधकों को धर्म के अनेक अनजाने पक्षों की जानकारी मिलने के अतिरिक्त बुद्ध-वाणी को मूल रूप में पढ़ने की प्रेरणा भी मिलेगी।

सभी साधकगण के प्रति मंगल भावों सहित,

स. ना. टंडन

संयुत्तनिकाय-१

सगाथावग्ग

१. देवतासंयुत्त

यह संयुत्त आठ वर्गों में विभाजित है, जिनके अंतर्गत इक्यासी सुत्त हैं।

१. नळ-वग्ग

[सुत्त – ओघतरण, निमोक्ख, उपनीय, अच्चेन्ति, कतिछिन्द,
जागर, अप्पटिविदित, सुसम्मुट्ठ, मानकाम, अरञ्ञ।]

प्रथम सुत्त के अनुसार भगवान ने एक देवता के पूछने पर उसे बताया कि मैंने बिना रुके, बिना कोशिश किये (कामभोग, भव-तृष्णा, मिथ्या-दृष्टि तथा अविद्या रूपी) बाढ़ को पार किया, क्योंकि यदि कहीं रुकता तो डूब जाता और कोशिश करता तो बह जाता। इस प्रकार उन्होंने दोनों अंतों को छोड़ कर मध्यम मार्ग को अपनाते हुए उसे अपनी बुद्धत्व-प्राप्ति के बारे में बताया।

भगवान ने मोक्ष की चर्चा करते हुए बतलाया कि तृष्णामूलक कर्म-बंधन के नष्ट हो जाने से, संज्ञा और विज्ञान के भी मिट जाने से, वेदनाओं का जो निरुद्ध और शांत हो जाना है, यही मोक्ष, प्रमोक्ष या विवेक कहलाता है।

उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि शांति चाहने वाला व्यक्ति सांसारिक भोगविलास त्याग दे।

२. नन्दन-वग्ग

[सुत्त – नन्दन, नन्दति, नत्थिपुत्तसम, खत्तिय, सणमान,
निद्दातन्दी, दुक्कर, हिरी, कुटिका, समिद्धि।]

प्रथम सुत्त के अंतर्गत एक देवता नंदन वन के 'सुख' की दुहाई देता है, जबकि एक अन्य देवता इसके लिए उसकी प्रताड़ना करता है – "अरहंतों के